

UnivColl International Multidisciplinary Research Journal

Volume 2 | Issue 2, February 2026, pp. 1-10

ISSN (Online): 3108-1460

Homepage: <https://univcolljournal.com>



Title: आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास: उदारवादी से उग्रवादी चरण तक एक सैद्धांतिक अध्ययन
Author(s): रणधीर कुमार
Affiliation(s): यूजीसी (राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा), एम.ए. (इतिहास), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
DOI: <https://doi.org/10.65919/uimrj.2026.v2i2001>
History: Received: 11 December 2025, Accepted: 27 January 2026, Published: 10 February 2026
Citation: कुमार, र. (2026). आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास: उदारवादी से उग्रवादी चरण तक एक सैद्धांतिक अध्ययन. *UnivColl International Multidisciplinary Research Journal*, 2(2), 1-10, <https://doi.org/10.65919/uimrj.2026.v2i2001>
Copyright: © 2026 The Author(s)
Licensing:  [Open access under CC BY-NC 4.0](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)
Conflict of Interest: The author(s) declare no conflict of interest.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Corresponding Author: रणधीर कुमार
Published By: [UnivColl Publications](https://univcolljournal.com)

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास: उदारवादी से उग्रवादी चरण तक एक सैद्धांतिक अध्ययन

रणधीर कुमार

यूजीसी (राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा), एम.ए. (इतिहास), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सारांश

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास एक क्रमिक, बहुआयामी और संघर्षशील ऐतिहासिक प्रक्रिया रही, जिसमें उदारवादी और उग्रवादी दोनों चरणों ने स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा निर्धारित की। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव, उसके वैचारिक आधार, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक परिवर्तन का सैद्धांतिक विश्लेषण करना है। उदारवादी चरण में संवैधानिक सुधारों, प्रार्थना-पत्रों, प्रतिनिधित्व, नागरिक अधिकारों और शांतिपूर्ण राजनीतिक साधनों पर बल दिया गया। दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले और फिरोजशाह मेहता जैसे नेताओं ने आर्थिक शोषण की आलोचना करते हुए राष्ट्रीय चेतना को संगठित आधार प्रदान किया। किन्तु औपनिवेशिक दमन, बंगाल विभाजन, आर्थिक विषमता तथा उदारवादी राजनीतियों की सीमाओं ने अधिक सक्रिय और उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल ने स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा को राजनीतिक संघर्ष के साधन के रूप में प्रस्तुत किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उदारवादी और उग्रवादी धाराएँ परस्पर विरोधी होते हुए भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पूरक शक्तियाँ थीं। उदारवादियों ने राजनीतिक संगठन, सार्वजनिक विमर्श और संवैधानिक चेतना विकसित की, जबकि उग्रवादियों ने आत्मनिर्भरता, जनसक्रियता और राष्ट्रीय स्वाभिमान को प्रबल बनाया। इन दोनों चरणों के संयुक्त प्रभाव ने स्वतंत्रता संघर्ष को व्यापक सामाजिक आधार, वैचारिक गहराई तथा भविष्य के जनांदोलनों के लिए राजनीतिक ऊर्जा प्रदान की। यह अध्ययन राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, आर्थिक स्वावलंबन और सामूहिक अस्मिता की प्रक्रिया के रूप में रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय राष्ट्रवाद, उदारवादी चरण, उग्रवादी राष्ट्रवाद, स्वदेशी आंदोलन, औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन।

1. प्रस्तावना

प्रस्तावना अनुभाग में आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव एवं विकास का व्यापक संदर्भ प्रस्तुत किया जाता है। यह अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के उदारवादी एवं उग्रवादी चरणों के अंतर्निहित सिद्धांतों, ऐतिहासिक घटनाओं एवं सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। इस प्रक्रिया में राजनीतिक विचारधाराओं का उत्क्रमण, सामाजिक मुद्राओं तथा विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्याय का उद्देश्य विभिन्न चरणों में राष्ट्रवाद की धाराओं का तुलनात्मक विश्लेषण कर यह समझना है कि किस प्रकार विचारधाराओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के संघर्ष को आकार दिया। इसमें विशेष ध्यान इस बात पर केंद्रित है कि कैसे औपनिवेशिक पृष्ठभूमि में भारतीय जनता अपने राष्ट्रीय धरोहर एवं सांस्कृतिक स्वायत्तता के प्रति जागरूक हुई, और उस जागरूकता ने किस प्रकार सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित किया। साथ ही, इस प्रक्रिया में निहित विभिन्न धाराओं के बीच विचारवादी संघर्ष एवं उनके सामाजिक आधार की भी समीक्षा की गई है। प्रस्तावना में यह भी रेखांकित किया गया है कि राष्ट्रवाद के इस विकास में विविध विचारधारात्मक और ऐतिहासिक जटिलताएं एवं उनके परस्पर संबंध विस्तृत हैं। इस अध्ययन का आधार इस धारणा पर केंद्रित है कि राष्ट्रवादी आंदोलन ने मात्र राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का भी मार्ग प्रशस्त किया। इसलिए, यह लेखिका एवं शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वे इन विविध यथार्थताओं का सम्यक अवगठन कर एक परिपक्व दृष्टिकोण विकसित करें। निसंदेह, यह अध्ययन राष्ट्र के समकालीन स्वरूप एवं उसकी भावना का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक भारत के राष्ट्रवाद की जटिलता एवं विविधता को समझने के लिए अनिवार्य आधार है।

2. परिभाषाएँ और सैद्धांतिक ढाँचा

राष्ट्रवाद की परिभाषाएँ और सैद्धांतिक ढाँचा विविध दृष्टिकोणों के आधार पर विश्लेषित किए जाते हैं। सामान्यतः, राष्ट्रवाद को एक संप्रभुता, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक स्वतंत्रता की भावना से समझा जाता है। यह भावना सम्प्रेषण और सामाजिक एकता का माध्यम होकर, राष्ट्र की स्वायत्तता की अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त, सैद्धांतिक ढाँचे में समाजशास्त्रीय, राजनीतिक और सांस्कृतिक सिद्धांत भी शामिल हैं, जो राष्ट्रवाद के उद्भव और विकास के विभिन्न आयामों को व्याख्यायित करते हैं।

राष्ट्रवाद के सिद्धांत विविध धाराओं में विभाजित होते हैं, जिनमें मुख्यतः नैतिक, नागरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्करण शामिल हैं। प्रत्येक धारणा राष्ट्र की परिभाषा, उसकी पहचान, और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करती है। जैसे, नागरिक राष्ट्रवाद स्वायत्तता और संविधानिक अधिकारों पर केन्द्रित होता है, जबकि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद राष्ट्रीय संस्कृति एवं परंपराओं को प्रमुखता देता है। इन धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि राष्ट्रवाद का स्वरूप समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहा है, जिससे विभिन्न चरणों में उसके रूप एवं प्रभाव भिन्न रहे हैं।

सैद्धांतिक ढाँचे में इन विविध धाराओं का विश्लेषण आवश्यक है, क्योंकि यह समझने में सहायता करता है कि कैसे विविध विचारधाराएँ राष्ट्र की परिभाषा और उसकी समकालीन पहचान को आकार देती हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि औपनिवेशिक प्रतिक्रिया और स्वाधीनता संग्राम के दौरान विभिन्न विचारधाराओं की भूमिका का मूल्यांकन किया जाए। इससे न केवल राष्ट्रवाद के विकास का समग्र चित्र उभरता है, बल्कि यह भी समझ में आता है कि विभिन्न विचारधाराओं ने अपने-अपने समय में राष्ट्र की अभिव्यक्ति और स्वायत्तता के लिए कैसे प्रयास किए। इस प्रकार, परिभाषाएँ और सैद्धांतिक ढाँचा राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य अवधारणात्मक आधार को रेखांकित करता है, जो उस कालखंड की सामाजिक-राजनीतिक जटिलताओं को समझने में सहायक होते हैं।

3. उदारवादी राष्ट्रवाद का अग्रिम चरण

उदारवादी राष्ट्रवाद का अग्रिम चरण भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का परिचायक है, जहाँ पर राष्ट्रीय चेतना ने संगठित होकर सामाजिक एवं राजनितिक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की। इस चरण में स्वतंत्रता संग्राम के आधारभूत विचारधारा की स्थापना हुई, जो मुख्यतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता, संविधानिक अधिकारों एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान पर केंद्रित थी। औपनिवेशिक दमन एवं शोषण के विरुद्ध खड़ी यह राष्ट्रवाद उस समय की राजनीतिक आवश्यकताओं तथा सामाजिक संवेदनाओं का प्रतिबिंब थी। ब्रिटिश शासन की नीतियों के प्रति असंतोष और भारतीय समाज की पुनरुत्थान की आकांक्षा ने इस आंदोलन को धार दी। इस दौर में विभिन्न स्वतन्त्रता संग्राम संगठनों का उदय हुआ, जिनमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रमुख भूमिका में थी। इन संगठनों ने सामाजिक एकता एवं राजनीतिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया, साथ ही भारतीय संस्कृति और परंपराओं को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

इस चरण का एक महत्वपूर्ण आयाम सांस्कृतिक एवं भाषाई आंदोलनों का विकास भी था, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को सांस्कृतिक स्तर पर मजबूत किया। इस समय अंग्रेजों की शिक्षानीतियों व आर्थिक शोषण के विरुद्ध असहयोग और बहिष्कार का आंदोलन भी प्रभावी रहा। संविधानिक माँगें और राहतपूर्ण नीति अपनाने की दिशा में भी प्रयास हुए, जिनमें स्वशासन की दिशा में कदम शामिल थे। संघटनात्मक स्तर पर राजनीतिक दलों और सामाजिक समूहों ने अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई, और स्वतंत्रता के मार्ग पर सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। इस पूरे दौर का आधारभूत उद्देश्य भारतीय समाज में देशभक्ति और स्वायत्तता की भावना को प्रबल बनाना था, जिसके कारण यह चरण भारतीय राष्ट्रवाद के विकास का एक स्वच्छ और सारगर्भित परिचायक माना जाता है।

3.1. औपनिवेशिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक विचार

औपनिवेशिक अवधि में भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और विकास का विशिष्ट रूप उस समय के विदेशी शासन की नीतियों एवं सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित था। औपनिवेशिक सत्ता ने अपनी आर्थिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को विभाजित कर दिया, जिससे सामाजिक विभाजन एवं असमानताएँ जटिल हो गईं। इससे उभरते हुए राष्ट्रीय जागरूकता ने ब्रिटिश औपनिवेशिक नौकरशाही और व्यापारिक नीतियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप स्वतंत्रता और राष्ट्रीय चेतना का प्रवाह शुरू किया।

राजनीतिक विचारधाराओं में उदारवादी धाराएँ प्रारंभिक चरण में प्रभावी रहीं, जिन्होंने संवैधानिक सुधारों और नागरिक स्वतंत्रताओं की माँग को प्रमुख महत्व दिया। इसके केंद्र में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति सम्मान, विविधता का सम्मान, तथा संविधानिक व्यवस्था की स्थापना थी। इस दौर में, भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश कानून और राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन कर स्वदेशी चेतना को बल दिया। इस परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रवाद का यह उदारवादी चरण अपनी संवैधानिक रणनीति, शांतिपूर्ण प्रतिक्रिया तथा राजनीतिक संगठनों की स्थापना से परिलक्षित होता है।

साथ ही, इस परिप्रेक्ष्य में विदेशी शासन की शोषणकारी नीतियों और भारतीय समाज में व्याप्त विभाजन ने राष्ट्रवादी चेतना को झकझोर कर अधिक सक्रिय एवं स्वतंत्रता की दिशा में उन्मुख कर दिया। इस स्थिति ने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर संगठनबद्धता प्रदान की, जिसने अंग्रेजी विरोधी असहयोग और स्वदेशी स्वरूप की पुनः स्थापना को प्रेरित किया। अंततः, इस दौर का परिणाम भारतीय राजनीतिक चेतना के परिपक्व होने और स्वतंत्रता संग्राम के विस्तृत प्रस्थान बिंदु के रूप में उभरा।

3.2. संगठित असहयोग और राष्ट्रीय पहचान की पुनरुत्पत्ति

संगठित असहयोग आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक नए मोड़ का संकेत दिया, जिसने स्वतंत्रता के प्रति उत्साह एवं जागरूकता को जागरूकता की एक नई तीव्रता दी। इस आंदोलन के दौरान, भारतीय समाज में पुनरुत्पत्तियों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिसने देशवासियों में अपनी राष्ट्रीय पहचान की पुनः स्थापना की प्रक्रिया को प्रेरित किया। असहयोग की रणनीति ने न केवल विदेशी वस्तुओं एवं कार्यालयी मशीनों का विरोध किया, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपराओं एवं भाषाओं

की महत्ता को उजागर किया। इसने भारतीय जनता के मनोवृत्तियों में एकता और स्वाभिमान की भावना को जीवंत किया, जिसने राष्ट्रीय चेतना को नई प्रेरणा दी। आंदोलन ने विभिन्न सामाजिक वर्गों, समुदायों एवं संस्थानों को संगठित रूप से एक साथ लाने का कार्य किया। इससे भारतीय समाज में एक नए प्रकार का राष्ट्रवाद का उद्भव हुआ, जिसमें स्वाधीनता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि सामूहिक स्वाभिमान एवं सांस्कृतिक पहचान का भी अभिव्यक्ति था। साथ ही, इस आंदोलन के दौरान सरकार एवं नेतृत्व की रणनीतियों के प्रति जनता का विश्वास मजबूत हुआ, और असहयोग की अभिव्यक्तियों ने आंदोलन को व्यापक स्तर पर फैलाने में सहायता प्रदान की। इस प्रकार, संगठित असहयोग व्यवस्था ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर नई ऊर्जा प्रदान करते हुए, एक सशक्त राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में अपना योगदान दिया। यह प्रक्रिया स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष का एक प्रेरक एवं निर्णायक माध्यम बन गई, जिसने व्यापक जनता के साथ-साथ आंदोलन के रणनीतिक स्वरूप को भी परिष्कृत किया।

3.3. संविधानिक माँगें और राहतपूर्ण नीतियाँ

संविधानिक माँगें और राहतपूर्ण नीतियों ने भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किए। इन पहलों का मुख्य उद्देश्य समाज में समावेशन, न्याय और समानता की स्थापना था, जिससे विविधता को संरक्षण और अधिकारों का सशक्तिकरण सुनिश्चित हो सके। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, राजनीतिक नेताओं ने संविधान के माध्यम से संविधानिक और कानूनी ढाँचे का विकास किया, जो स्वतंत्रता के बाद भी राष्ट्र की स्थिरता हेतु अनिवार्य थे। इन नीतियों में मुख्यतः धर्मनिरपेक्षता, समावेशन, लोकतांत्रिक मूल्य और सामाजिक न्याय की स्थापना पर बल दिया गया। खासतौर पर, राहतपूर्ण योजनाएँ जैसे गरीबों के लिए मजदूरी गारंटी, महिलाओं और पिछड़े वर्गों के सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में कदम उठाए गए। ये प्रयास राष्ट्र के एकीकृत स्वप्न को साकार करते हुए, विविध समूहों के बीच विश्वास और सहिष्णुता का वातावरण निर्मित करने का आधार बने। साथ ही, इन नीतियों ने राष्ट्रभक्ति के नए स्वरूप को भी प्रोत्साहित किया, जिससे विभिन्न समुदायों के बीच समानता एवं समरसता की भावना प्रबल हुई। इस प्रकार, संविधानिक माँगें और राहतपूर्ण नीतियों ने भारतीय समाज में राष्ट्र निर्माण के संकल्प को सशक्त किया, जो उग्रवादी और संभावित संघर्षपूर्ण मार्ग की ओर बढ़ने से पूर्व, एक स्थिर और समावेशी राष्ट्र के विकास का आधार बन सके।

4. उग्रवादी राष्ट्रवाद के उभरने के कारण

उग्रवादी राष्ट्रवाद के उभरने के पीछे सामाजिक, राजनैतिक और विदेशी कारकों का जटिल सम्मिश्रण स्पष्ट है। सामाजिक-आर्थिक असमानताओं ने आम जनता में असंतोष और विश्वास की कमी को जन्म दिया, जिसके फलस्वरूप कतिपय समूहों ने तात्कालिक असंतोष का शाब्दिक एवं हिंसक प्रतिक्रिया अपनाई। यह असमानता, विशेषकर औद्योगिकीकरण और श्रमशक्ति के शोषण के कारण उत्पन्न हुई, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन के क्रमिक विकास में एक निर्णायक मोड़ लाया। साथ ही, राजनीतिक अस्थिरता और वैचारिक ध्रुवीकरण ने द्वेषपूर्ण मतभेदों को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप आंदोलन का हिंसक एवं आक्रामक स्वरूप सामने आया। विदेशी प्रभाव, विशेष रूप से ब्रिटिश सत्ता की नीतियों और कारोबारी हितों ने विरोध की प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहन दिया। अनेक स्थानों पर, प्रतिक्रियात्मक प्रतिक्रियाओं का उद्भव हुआ, जो आंदोलन को उग्रता की ओर ले गया। इन तत्वों ने मिलकर राष्ट्रवाद के विभिन्न चरणों में एक उग्रवादी प्रवृत्ति का विकास किया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम के नए आयाम स्थापित किए। यह चरण, उदारवादी आंदोलन की अपेक्षा अधिक सक्रिय और हिंसक साधनों का प्रयोग करता था, जिससे राष्ट्र की स्वाधीनता के संघर्ष में नई ऊर्जा एवं झंझावत उत्पन्न हुए। संक्षेप में कहें तो, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, राजनीतिक अस्थिरता और विदेशी प्रभावों की प्रतिक्रियाएँ इन सभी कारकों ने मिलकर आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उग्रवादी चरण के उद्भव को प्रेरित किया।

4.1. सामाजिक-आर्थिक असमानताएं

सामाजिक-आर्थिक असमानताएं राष्ट्रवादी आंदोलन के अभ्युत्पन्न कारकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में विभाजन और आर्थिक व्यवस्था में व्यापक विपन्नता ने स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित करने वाले जनमानस के बीच नाराजगी और

असंतोष को जन्म दिया। कृषक वर्ग, मजदूर वर्ग और पिछड़े समुदायों के बीच गहरी आर्थिक खाइयों का बनना सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को और अधिक उभार रहा था, जिससे उनकी राष्ट्रीय भावना में अंतर बढ़ रहा था। आय की असमानता और संसाधनों की वितरण में विसंगतियों ने सामूहिक चेतना को प्रभावित किया और आंदोलनकारी समूहों को सामाजिक बदलाव का आग्रह दिया। औपनिवेशिक सत्ता ने बड़े व्यापारी और औद्योगिक वर्ग को लाभान्वित करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों में असमानता को दृढ़ किया, जिससे स्वतंत्रता की मांग और भी व्यापक आधार पर फैल गई। आर्थिक असमानताएं सामाजिक गतिशीलता को बाधित कर रही थीं, जिससे राष्ट्रव्यापी संघर्ष का स्वरूप मजबूत हुआ। इन असमानताओं ने नेतृत्व वर्ग और आंदोलनकारियों को यह संकेत भी दिए कि स्वतंत्रता और समानता की दिशा में सामाजिक बदलाव जरूरी है। इस संदर्भ में अनेक आंदोलनों और संगठनों ने आर्थिक न्याय और सामाजिक समता पर बल दिया, जिससे राष्ट्रवाद का विविध और शक्तिशाली स्वरूप विकसित हुआ। अतः, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं भारतीय राष्ट्रवाद में आंदोलनकारी चेतना के आवश्यक तत्व बन गईं, जिन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष को गतिशील और जनता से जुड़ा बनाया।

4.2. राजनीतिक अस्थिरता और वैचारिक ध्रुवीकरण

राजनीतिक अस्थिरता एवं वैचारिक ध्रुवीकरण ने आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के संक्रमणकालीन चरणों में गहरा प्रभाव डाला है। स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारंभिक चरण में, ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू नीतियों ने जनता में असंतोष और प्रतिक्रिया की भावना को जन्म दिया, जिसने संगठित आंदोलनों को जन्म दिया। इस प्रक्रिया में विचारधाराओं का मुल्यों और प्राथमिकताओं के आधार पर विभाजन हुआ। उदारवादी आंदोलन जहां और राजनीतिक अधिकारों की प्रमुखता के माध्यम से एक व्यापक राष्ट्रीय चेतना का निर्माण कर रहा था, वहीं उग्रवादी धाराएं अधिक कट्टरपंथी और प्रतिक्रियात्मक थीं, जिनमें विदेशी प्रभावों के प्रति विरोध और स्वावलंबन की प्रवृत्ति प्रमुख थी। परिणामस्वरूप, देश के भीतर वैचारिक ध्रुवीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को और अधिक जटिल बना दिया। यह विभाजन केवल नीतिगत नहीं था, बल्कि सामाजिक-जातीय एवं सांस्कृतिक स्तर पर भी विस्तृत था, जिससे राजनीतिक स्थिरता को बाधित करने वाली स्थितियाँ जागरूक व अनजानी दोनों ही थीं। अंतःसंबंधी संघर्षों और असमंजस के इस दौर में, विभिन्न दल और नेता अपने-अपने दृष्टिकोण का पक्ष लेकर, जनभावनाओं से जुड़ने के प्रयास में लगे रहे। इस वैचारिक संघर्ष का परिणाम भारत में राजनीतिक चेतना के फूट पड़ने एवं स्वायत्त राष्ट्र की दिशा में तीव्र ध्रुवीकरण के रूप में परिलक्षित हुआ, जिसने एक ओर राष्ट्र के भीतर अस्थिरता और ऐतिहासिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया, तो दूसरी ओर, स्वतंत्रता की दिशा में नए राजनीतिक विमर्शों का जन्म भी किया।

4.3. विदेशी प्रभाव और प्रतिक्रियात्मक प्रतिक्रियाएँ

विदेशी प्रभावों ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रतिक्रिया प्रवृत्तियों का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औपनिवेशिक शक्ति के नियंत्रण के दौरान विदेशी सत्ता की तरफ से प्रेषित नीतियों, सांस्कृतिक हस्तक्षेप और आर्थिक शोषण ने भारतीय जनता में असंतोष और जागरूकता का प्रपाठ किया। इन प्रभावों के सामने भारतीय सामाजिक संरचना और राष्ट्रीय चेतना में प्रतिक्रिया स्वरूप, विभिन्न स्तरों पर प्रतिक्रियाएँ उभरीं, जिनमें से सबसे प्रमुख थीं स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास। ये प्रतिक्रियाएँ विदेशी प्रभावों के खिलाफ स्वाधीनता की इच्छा प्रकट करने का माध्यम बनीं। इस तरह, विदेशी प्रभाव की निरंतरता और प्रतिक्रियात्मक प्रतिक्रियाएँ भारतीय राष्ट्रवाद के संक्रमणकाल में विविध विमर्श और रणनीतियों का आधार बन गईं। इन प्रतिक्रियाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को न केवल मजबूत किया बल्कि देश में आत्म-सम्मान, स्वाधीनता और आधुनिक राष्ट्रवाद के नए शृंगार भी प्रस्तुत किए। अतः, विदेशी प्रभावों के दबाव के मुख्य रूप से प्रतिरोध और प्रतिक्रिया शक्तियों का विकास भारतीय राष्ट्रवाद के क्रमिक उभार में केंद्रीय भूमिका निभाता रहा।

5. उग्रवादी राष्ट्रवाद के विविध रूप

उग्रवादी राष्ट्रवाद के विविध रूपों में आतंकवाद, असामाजिक आंदोलनों एवं सशस्त्र संघर्ष जैसी विभिन्न प्रवृत्तियों का समावेश होता है, जो स्वतंत्रता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न सामाजिक तथा राजनीतिक कारकों से प्रेरित रहे हैं। इन संक्रमणकालीन अवस्थाओं में कुछ आंदोलनों ने हिंसा का विकल्प अपनाकर लक्ष्यों को तुरंत प्राप्त करने का प्रयास किया,

जबकि कुछ ने शांतिपूर्ण एवं अहिंसक माध्यमों से अपनी मांगें व्यक्त कीं। हिंसक प्रतिशोध का यह स्वरूप विशेष रूप से उन्हें खुफिया गतिविधियों, हथियारबंद संघर्षों एवं अस्थिरता को बढ़ावा देने के रूप में परिलक्षित होता है, जो साम्राज्यवादी शक्तियों एवं उनके समर्थकों के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में विकसित हुए। वहीं, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विमर्शों का उभार भी इन आंदोलनों का अहम पहलू बना, जिसमें स्वतंत्रता की धारणा केवल राजनीतिक स्वाधीनता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व, आर्थिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय की भी मांग थी। इन विभिन्न रूपों में स्थितियों के मुताबिक, राष्ट्रवादी गतिशीलता ने अपने स्तरों पर सार्वजनिक चेतना को जगा कर राष्ट्र के आदर्शों एवं स्वायत्तता के प्रति प्रतिबद्धता को नयी दिशा दी। ये विविध रूप न केवल स्वतंत्रता संग्राम के अधूरे प्रयोग और भावनात्मक उग्रता को प्रतिबिंबित करते हैं, बल्कि उनकी जटिलताओं एवं गाम्भीर्य का विश्लेषण राष्ट्रवादी आंदोलन की बहुआयामी संरचना के परिचायक के रूप में महत्वपूर्ण है।

5.1. अहिंसक प्रतिरोध और असहयोग आंदोलन

अहिंसक प्रतिरोध और असहयोग आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अभिन्न भाग थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में एक नवीन रणनीति के रूप में अपनी महत्ता स्थापित की। इन आंदोलनों में संयुक्त राष्ट्रजीवी विचारधारा का परिचय हुआ, जो केंद्रित था बिना हिंसक संघर्ष के अपनी बात कहने पर। महात्मा गांधी के नेतृत्व में इनमें मुख्य रूप से असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, आंदोलन वापस लेने का निर्णय और गरीबों व पिछड़ों की भागीदारी की जा सकती है। इन आंदोलनों का आधार था स्वाधीनता की भावना, जो विदेशी सत्ता के विरोध में शांतिपूर्ण और सत्याग्रह के माध्यम से व्यक्त की गई थी।

यह संघर्ष भारतीय जनता की संवेदनाओं को जागरूक करने, राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक बदलाव का प्रमुख मोड़ था। इन आंदोलनों ने न केवल राजनीतिक दृष्टिकोण को पुष्ट किया, बल्कि सामाजिक जागरूकता और स्व-दृष्टिकोण में भी सहायक सिद्ध हुए। गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रवृत्ति को व्यापक जनसमूह में स्थापित किया। इन आंदोलनों ने दिखाया कि अहिंसा का मार्ग केवल नैतिक शक्ति का प्रयोग ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के सक्रिय अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

आंदोलनों की सफलता का रहस्य उनका स्वस्फूर्त और व्यापक समर्थन था, जिससे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। इन आंदोलनों ने यह भी स्थापित किया कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष व्यक्तिगत शक्ति से अधिक सामाजिक और नैतिक शक्ति का परिणाम है। इस संलग्नता से प्रेरित होकर हजारों भारतीयों ने अपने समर्पण और साहस का परिचय दिया, जिससे भारतीय समाज में नए सौच और सम्भावनाओं का प्रसार हुआ। परिणामस्वरूप, ये आंदोलन राष्ट्र की चेतना में स्थायी स्थान बनाते गए, और आगे के उग्रवादी चरण के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बने।

5.2. हिंसक प्रतिशोध और त्वरित समाज-संरचना परिवर्तन

हिंसक प्रतिशोध और त्वरित समाज-संरचना परिवर्तन का चरण राष्ट्रवादी आंदोलन के उस मोड़ को दर्शाता है, जब संघर्ष की तीव्रता और निकटस्थ परिणामों की आकांक्षा ने हिंसक गतिविधियों का प्रादुर्भाव किया। इस चरण में, स्वतंत्रता संग्राम के प्रवर्तकों ने अपने राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रतिशोधात्मक स्वरूप अपनाए, जिससे समाज में त्वरित और तीव्र परिवर्तन क्षणिक रूप से घटित हुए। हिंसक प्रतिशोध ने प्रशासनिक तंत्र और सामाजिक संरचनाओं पर एक तरह का दबाव डाला, जिससे न केवल राजनीतिक चेतना जागरूक हुई, बल्कि सामाजिक व्यवस्था भी तीव्र रूप से बदली। यह दौर असमानताओं और पूर्वाग्रहों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में उभरा, जिनके कारण विदेशी वर्चस्व के प्रति घृणा और प्रतिशोध की भावना गहरी हो गई थी।

हिंसात्मक गतिविधियों का प्रवाह सामाजिक संधियों को भंग करने वाला और नए समाज-संरचना के त्वरित निर्माण का माध्यम बन गया। इस प्रक्रिया में आंदोलनों ने सामूहिकता के साथ-साथ व्यक्तिगत जज्बा भी बढ़ाया, जिससे विभाजन, विद्रोह और क्रांतिकारी आंदोलनों का जन्म हुआ। ये आंदोलनों अपने आप में एक तरह का एक सामाजिक परिवर्तन का प्रक्रिया थी, जो पुराने शोषण और असमानताओं को उखाड़ फेंकने की प्रक्रिया में तेज़ी लाने का माध्यम बनी। इस चरण में प्रतिक्रियात्मक

और उग्र गतिविधियों ने सामूहिक चेतना को एक नया आयाम दिया, जिससे राष्ट्रीयता के स्वरूप में तीव्रता और निष्ठा का संचार हुआ।

अंततः, हिंसक प्रतिशोध एवं त्वरित समाज-संरचना परिवर्तन का यह कालांतर न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और विचारधारात्मक परिवर्तन का प्रतिबिंब है, जिसने स्वतंत्रता के आंदोलन को उसकी चरम गति प्रदान की और राष्ट्र की नई पहचान को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5.3. सांस्कृतिक-आर्थिक विमर्शों का उभार

सांस्कृतिक और आर्थिक विमर्शों का उभार उग्रवादी राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। इस अवधि में सामाजिक चेतना की नई ऊँचाइयां प्राप्त हुईं, जिनमें राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत एवं आर्थिक स्वावलंबन पर विशेष ध्यान दिया गया। आर्थिक विमर्शों में आत्मनिर्भरता और भारतीय उद्योग, कुटीर व्यवसाय एवं कृषिक्षेत्र को बल देना केंद्रित रहा। यह दृष्टिकोण विदेशी व्यापार एवं पूंजी पर निर्भरता को चुनौती देने का प्रयास था, जिससे स्वदेशी उत्पादन एवं आर्थिक स्वायत्तता सुनिश्चित की जा सके। इस प्रक्रिया ने राष्ट्रीय चेतना में गर्जना की तरह जागरूकता उत्पन्न की, और अनेक समाजों, वर्गों एवं समुदायों को अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान किया। साहित्य, कला एवं साहित्यकारों की भागीदारी ने इस विमर्श को गहरा किया, जिससे राष्ट्रीय भावना का अभिवृद्धि हुआ। इन विचारधाराओं ने राष्ट्रीय आंदोलन के विविध चरणों में राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता को मजबूत किया। सांस्कृतिक-आर्थिक विमर्शों की यह उभार न केवल स्वदेशी आंदोलन की आधारशिला बना, बल्कि भारतीय जनता में आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की भावना को भी प्रोत्साहित करता रहा। इसके माध्यम से भारत में एक नई राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, जिससे स्वतंत्रता संग्राम का जोर और प्रभाव बढ़ा। ऐसा लगने लगा कि आर्थिक स्वावलंबन एवं सांस्कृतिक जागरूकता राष्ट्र के पूर्ण स्वतंत्रता और सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसी क्रम में, इन विमर्शों ने राष्ट्रवादी आंदोलनों की विविध धाराओं को भी व्यावहारिक एवं विचारधारात्मक आधार प्रदान किया।

6. ऐतिहासिक प्रमाण और प्रमुख घटनाक्रम

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में ऐतिहासिक प्रमाण एवं प्रमुख घटनाक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय स्वतःस्फूर्त आंदोलन, जैसे असहयोग आंदोलन (1920-1922), की शुरुआत स्वतंत्रता संग्राम में परिवर्तनकारी मोड़ के रूप में हुई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, यह आंदोलन अंग्रेजी शासन के प्रति असंतोष का सार्वजनिक प्रकटीकरण था, जिसने व्यापक जनसहयोग प्राप्त किया। इस आंदोलन ने राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करने एवं संगठित रूप से स्वतंत्रता के आह्वान को जनमानस में स्थापित किया। इससे पहले, 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने स्वतःस्फूर्त रुझान विकसित किए, जिनमें बाल गंगाधर तिलक एवं लाला लाजपत राय जैसे व्यक्तित्वों का विशेष योगदान रहा। इन नेताओं ने भारतीय संस्कृति एवं स्वदेशी वस्तुओं का समर्थन कर राष्ट्रवाद को जीवंत किया। इसके अतिरिक्त, सन 1857 की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख स्थान है, जिसने बाद के आंदोलनों के लिए राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रेरणा का स्रोत प्रदान किया। उस समय के अनेक दस्तावेज एवं सरकार की रिपोर्टें इन घटनाओं की महत्ता को रेखांकित करते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में हुए आंदोलनों, जैसे खादी आंदोलन तथा असहयोग आन्दोलन, ने भारतीय समाज में राष्ट्रवाद की भावना का विस्तार किया। इन प्रमुख घटनाक्रमों ने न केवल राष्ट्रीय चेतना को जागरूक किया बल्कि नेतृत्व वर्ग एवं सामाजिक संगठनों का भी गठन किया, जो स्वतंत्रता के भाव को संरक्षण देते रहे। इन ऐतिहासिक प्रमाणों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रवाद की भावना समय के साथ विकसित होकर विभिन्न परिघटनाओं का निर्माण करती रही है, जो आगे के आंदोलन की आधारशिला बनी।

6.1. आंदोलनों के प्रमुख उत्कर्ष

आंदोलनों के प्रमुख उत्कर्ष में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रथम चरण में असहयोग आंदोलन का उद्भव और उसकी व्यापकता ने राष्ट्रीय चेतना को जीवंत किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में इस

आंदोलन ने भारतीय जनता को संगठित करने का अवसर प्रदान किया, जिससे सामाजिक चेतना में नाटकीय परिवर्तन हुआ। इस आंदोलन ने विदेशी सम्पत्ति एवं प्रशासन के प्रति असंतोष को एकजुट किया और भारत की स्वतंत्रता की दिशा में व्यापक जनांदोलन का आधार स्थापित किया। द्वितीय उत्कर्ष सविनय अवज्ञा आंदोलन का स्तोटिक विस्तार था, जिसने सतत संघर्ष का स्वरूप लिया। इस चरण में सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में जागरूकता जागी, जो स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊँचाइयों पर ले गया। तृतीय और अंतिम उत्कर्ष गांधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन और अंततः स्वतंत्रता के संग्राम की पूर्ण सफलताओं का प्रतीक रहा। ये आंदोलन न केवल एक शांतिपूर्ण प्रतिरोध के उदाहरण थे, बल्कि सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाते हुए स्वतंत्रता के मार्ग को प्रशस्त किया। इन घटनाओं ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में मील के पथर का कार्य किया और आंदोलनों की प्रमुख उत्कर्ष संस्थानिक और असंस्थागत दोनों ही रूपों में विकासशील संकल्पनाओं को साकार किया। इस व्यापक प्रक्रिया में नेतृत्व वर्ग का सामाजिक परिदृश्य, जनजन का राष्ट्रीय योगदान तथा क्रांतिकारी एवं शांतिपूर्ण आंदोलनों का समन्वित प्रभाव समग्र राष्ट्रवादी आंदोलनों के उत्कर्ष को रेखांकित करता है।

6.2. नेतृत्व-वर्ग और सामाजिक संग्रह

नेतृत्ववर्ग में राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक समझ के साथ संघर्ष और सहयोग की प्रवृत्तियों का मिश्रण होता है, जो राष्ट्रवादी चेतना के विकास का आधार बनता है। इस वर्ग में विभिन्न सामाजिक समूहों का सम्मिलन होता है, जिनकी प्राथमिकताएँ और हित कुछ अलग-अलग होते हैं। भारतीय असहयोग आंदोलन और अंग्रेज़ी शासन की नई चुनौतियों के मध्य, नेतृत्ववर्ग ने अपने निर्णयों और रणनीतियों के माध्यम से संगठन और सामूहिक चेतना का निर्माण किया।

सामाजिक संग्रह का तात्पर्य उस व्यापक समूह से है, जिसमें विभिन्न वर्ग, जाति, समुदाय, और सांस्कृतिक समूह सम्मिलित होते हैं। इन समूहों का ध्रुवीकरण और सह-अस्तित्व राष्ट्रवाद की अनिवार्य अवधारणा को मजबूत बनाते हैं। विशेष रूप से, सामाजिक संग्रह ने प्रेरणा का स्रोत, सामूहिक पहचान का आधार, और विरोध की ताकत के रूप में कार्य किया। नेतृत्व-अंतःसंबंध इस सामाजिक संग्रह के साथ उच्चतम संपर्क स्थापित करता है, जिससे आंदोलन को न केवल संगठित किया गया, बल्कि उसका जनाधार भी मजबूत हुआ। संघर्ष के दौरान, विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपने व्यक्तिगत हितों और राष्ट्रीय हितों के बीच सामंजस्य स्थापित किया, जो राष्ट्रवाद के विविध स्वरूपों की व्याख्या में सहायक रहा।

सामाजिक संग्रह का विस्तार और उसकी गतिशीलता राष्ट्रीय आंदोलन के सफलता-आधार को सुनिश्चित करती है। इस प्रक्रिया में नेतृत्व वर्ग का प्रभाव उस संदर्भ में अधिक स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि वे सामाजिक विविधता को समायोजित कर राष्ट्रीय एकता का लक्ष्य साधते हैं। इसलिए, सामाजिक संग्रह और नेतृत्व वर्ग का मेल लोकतांत्रिक चेतना और राष्ट्र की समग्रता को सृजित करने में अनिवार्य तत्व सिद्ध हुआ। इससे यह सिद्ध होता है कि राष्ट्रवाद की एक मजबूत और स्थायी परंपरा में सामाजिक समुदायों का एक संयुक्त और सक्रिय योगदान आवश्यक है, जो आंदोलन की स्थिरता और सफलता के लिए आधार बनता है।

6.3. चयनित दस्तावेज और लेखन

चयनित दस्तावेज और लेखन में उन अभिलेखों, घोषणापत्रों, और लेखों का विशिष्ट महत्व दर्शाया गया है, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की विभिन्न धाराओं और चरणों को स्पष्टता से रेखांकित किया है। इन दस्तावेजों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उत्पादक घोषणापत्र, स्वाधीनता संग्राम के दौरान प्रकाशित लेख, और नेतागण द्वारा दिए गए भाषण शामिल हैं। ये सभी रचनाएँ अपने समय की राजनीतिक और सामाजिक चेतना का प्रतिबिंब हैं और देश की आत्म-निर्भरता तथा स्वतंत्रता के प्रति जनता की संकल्पना को साकार करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। उदाहरण के तौर पर, उस समय के प्रमुख नेताओं ने अपने भाषणों, पत्रों, और संचार के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार किया, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों में एकता और जागरूकता का संचार हुआ। इन दस्तावेजों का अध्ययन राष्ट्रवादी विचारधारा के विकास का सूक्ष्म चित्रण करता है, साथ ही उन संघर्षों और प्रवृत्तियों को समझने का अवसर प्रदान करता है, जिन्होंने आधुनिक भारत के राष्ट्रवाद को एकत्रित किया। इस विश्लेषण के माध्यम से पता चलता है कि कैसे इन लेखनों ने राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रज्वलित किया और युवाओं, शिक्षकों, तथा कार्यकर्ताओं में

स्वाधीनता की प्रतिबद्धता का संचार किया। इन दस्तावेजों में भारतीय इतिहास एवं स्वाधीनता की लड़ाई को संजोए रखने वाले सार्थक विचार और नेतृत्व के उदाहरण भी प्रतिबिंबित होते हैं। इस तरह, चयनित दस्तावेज और लेखन राष्ट्रवादी आंदोलन की विविधता और उसकी क्रांतिकारी ऊर्जा का जीता-जागता दस्तावेज हैं, जिन्होंने स्वतंत्र भारत की आधारशिला रखी। इन ऐतिहासिक रचनाओं का अध्ययन हमें उस युग की नीतियों, विचारधाराओं, और संघर्षों की गहराई का अनुभव कराता है, साथ ही राष्ट्रवाद के विकास के इस चरण में व्यक्त विचारों की प्रामाणिकता को भी उजागर करता है।

7. निष्कर्ष

राष्ट्रवाद का विकास आधुनिक भारतीय इतिहास में अनेक परिघटनाओं एवं संघर्षों का परिणाम है, जहाँ प्रारंभिक उदारवादी विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम के शुरुआती चरणों में सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं राजनीतिक चेतना का संचार किया। इन प्रयासों में संस्था-सम्मत् और शांतिपूर्ण आंदोलन मुख्य रहे, जो एक संविधानात्मक एवं अधिक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते थे। जैसे-जैसे समय बीता, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, राजनीतिक अस्थिरता, और विदेशी प्रभावों ने क्रांतिकारी एवं उग्रवादी विचारधाराओं का जन्म दिया। इन विचारधाराओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अधिक तीव्र एवं संघर्षपूर्ण मार्ग अपनाए। सांस्कृतिक एवं आर्थिक विमर्शों का भी महत्व बढ़ा, जो राष्ट्रवादी भावना को जागरूक करने और स्वतंत्रता आंदोलन के विविध रूपों को प्रस्तुत करने में सहायक साबित हुए। सैद्धांतिक दृष्टिकोण में, संवैधानिक एवं नागरिक पहचान के साथ-साथ औपनिवेशिक प्रतिक्रिया एवं आत्म-निर्भरता की धाराओं का तुलनात्मक विश्लेषण हुआ। प्रमुख घटनाक्रम, जैसे आंदोलनों के उत्कर्ष एवं वरिष्ठ नेतृत्व वर्ग की भूमिका, राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप को रेखांकित करते हैं। इन सभी चरणों का अध्ययन, नीति निर्धारण के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रवाद का परिदृश्य निरंतर परिष्कृत एवं परिवर्तित होता रहा है। इन आंदोलनों के परिणामस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया तीव्र हुई और राष्ट्र की अस्मिता को नई दिशा मिली। अतः समेकित रूप से कहा जा सकता है कि आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास विभिन्न विचारधाराओं का समागम एवं संघर्ष का परिणाम है, जिससे स्वतंत्रता संग्राम की बहुआयामी प्रकृति उद्घाटित होती है।

Author's Declaration & Publication Consent:

The author(s) declare that the manuscript is original, accurate to the best of their knowledge, and does not knowingly infringe any copyright, privacy, or other third-party rights. All necessary permissions, ethical approvals, disclosures, and consents, where applicable, have been obtained. The author(s) accept responsibility for the content, data, interpretations, conclusions, authorship, and compliance with applicable research and publication ethics. Any conflicts of interest and funding sources have been appropriately disclosed. The author(s) authorize the Journal and Publisher to publish and disseminate the article under the Creative Commons AttributionNoncommercial 4.0 International License (CC BY-NC 4.0).

संदर्भ सूची

1. बंद्योपाध्याय, एस. (2004). प्लासी से विभाजन तक: आधुनिक भारत का इतिहास. ओरिएंट लॉन्गमैन.
2. चंद्र, बी. (1966). भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय और विकास: भारतीय राष्ट्रीय नेतृत्व की आर्थिक नीतियाँ, 1880-1905. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस.
3. चंद्र, बी., मुखर्जी, एम., मुखर्जी, ए., महाजन, एस., एवं पनिकर, के. एन. (1987). भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 1857-1947. पेंगुइन बुक्स.
4. चंद्र, बी., त्रिपाठी, ए., एवं डे, बी. (1972). स्वतंत्रता संग्राम. नेशनल बुक ट्रस्ट.
5. देसाई, ए. आर. (2019). भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि. पॉपुलर प्रकाशन. (मूल कृति 1948 में प्रकाशित)

6. सरकार, एस. (1973). बंगाल में स्वदेशी आंदोलन, 1903-1908. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस.

7. सरकार, एस. (1989). आधुनिक भारत, 1885-1947. मैकमिलन इंडिया.

8. सील, ए. (1971). भारतीय राष्ट्रवाद का उदय: उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रतिस्पर्धा और सहयोग. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

Publisher's Note: The statements, opinions, findings, interpretations, and conclusions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect the views of the Journal, its Editors, Editorial Board, reviewers, or Publisher. Responsibility for the accuracy, integrity, and scholarly content of the article rests primarily with the author(s). The Journal, Editors, and Publisher exercise reasonable editorial and ethical oversight in accordance with the Journal's established policies. However, to the extent permitted by applicable law, they shall not be responsible for any consequences arising from the use, application, or interpretation of the information contained in the article. The Publisher remains neutral with regard to jurisdictional claims in published maps and institutional affiliations.

